एक प्रयोगकर्ता के रूप में वुण्ट का योगदान

लिपजिग विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में वुण्ट तथा उनके शिष्यों द्वारा जितने भी कार्य किये गये, वे मूलतः हेल्महोल्ज, वेबर, तथा फेक्नर द्वारा किये गये कार्यों का ही एक क्रमबद्ध रूप था। इस प्रयोगशाला में किये गये सभी कार्य एक विशेष जनरल "Philosophische Studien" जो कि 1881 में संस्थापित किया गया था में प्रकाशित होते थे।

लिपजिग प्रयोगशाला में किये गये कार्यों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है —

- संवेदन एवं प्रत्यक्षण प्रयोग
- प्रतिक्रिया समय प्रयोग
- साहचर्य प्रयोग
- ध्यान प्रयोग
- भाव प्रयोग
- मनोभौतिकी प्रयोग (Psychophysical experiments)

= संवेदन एवं प्रत्यक्षण प्रयोग —

वुण्ट एवं उनके शिष्यों द्वारा संवेदन तथा प्रत्यक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये गये। सबसे अधिक कार्य दृष्टि प्रत्यक्षण के क्षेत्र में किये गये। श्रवण प्रत्यक्षण, स्पर्श प्रत्यक्षण, समय प्रत्यक्षण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण अध्ययन किये गये।

= प्रतिक्रिया समय प्रयोग —

प्रतिक्रिया समय प्रयोग को वुण्ट इसलिए महत्वपूर्ण मानते थे कि इनके द्वारा उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच तीन सम्भावित चरणों अर्थात् प्रत्यक्षण - संप्रत्यक्षण - इच्छा (perception - apperception - will) का सत्यापन हो पाता था। प्रतिक्रिया समय के तीन प्रकारों पर प्रयोग किये। सरल प्रतिक्रिया समय प्रयोग में प्रयोज्य उद्दीपन को देखते ही जल्द से जल्द अनुक्रिया करता था। विभेद प्रतिक्रिया समय में प्रयोज्य एक उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता था, परन्तु दूसरा उद्दीपन के प्रति नहीं। चयन प्रतिक्रिया समय प्रयोग में एक उद्दीपन के प्रति बायाँ हाथ से तथा दूसरा

NOTES

Scanned with CamScanner

उद्दीपन के प्रति बाहरी हाथ से अनुक्रिया करने को प्रयोज्य से कहा जाता था।

— साहचर्य प्रयोग —

वुण्ट के पहले साहचर्य पर कई शोध हो चुके थे, वे शब्द साहचर्य पर किये गये थे। इन प्रयोगों के आधार पर साहचर्य के दो प्रकार बतलाये — आन्तरिक साहचर्य और बाह्य साहचर्य। आंतरिक साहचर्य से तात्पर्य शब्दों के बीच तार्किक संबंध से होता है। जैसे- टेबुल- कुर्सी, शिक्षक- छात्र, पुरुष- स्त्री आदि। बाह्य साहचर्य वैसे साहचर्य होते हैं जिनकी प्रकृति आकस्मिक होती है इस तरह के साहचर्य का निर्माण मूलतः व्यक्ति के आदतों द्वारा होता है। जैसे — राजा- महल, अतिथि- घर आदि।

— ध्यान- संबंधी प्रयोग —

ध्यान से वुण्ट का तात्पर्य चेतना के संकीर्ण क्षेत्र के स्पष्ट प्रत्यक्षण से था। ध्यान के क्षेत्र में वुण्ट के अध्ययन का केन्द्र ध्यान प्रसार (range of attention) तथा ध्यान अस्थिरता (fluctuation of attention) था। वुण्ट ने ध्यान को त्रिविमिय माना है, क्योंकि इसमें अनुक्रमिक (successive) तथा समकालिक (simultaneous) दोनों तरह की घटनाएँ सम्मिलित होती हैं।

— भाव- संबंधी प्रयोग —

लिपजिग प्रयोगशाला में भाव पर कुछ शोधों के आधार पर वुण्ट ने भाव का त्रिविमिय सिद्धान्त (tridimensional theory of feeling) दिये। इस प्रयोगशाला में भाव का अध्ययन युग्मित- तुलना विधि द्वारा किया गया। जिसमें प्रयोज्यों को प्रत्येक उद्दीपन की तुलना श्रृंखला के अन्य उद्दीपन से करना होता था।

— मनोभौतिकी प्रयोग —

वुण्ट के अनुसार मनोभौतिकी में परिमाणात्मक समस्याएँ महत्वपूर्ण होती हैं वे मनोभौतिकी विधियों को संवेदन तीव्रता तथा निर्णय की प्रक्रिया के बीच के संबंध को अध्ययन करने का एक माध्यम मानते थे। उद्दीपन आपस में एक- दूसरे से चूँकि भिन्न होते हैं, इसलिए उसके सापेक्ष मात्रा के बारे में एक

Scanned with CamScanner

सभी नियोग संभव होता है।

स्पष्ट होता है कि लिपजिग विश्वविद्यालय में वुन्ट एवं उनके सहयोगियों द्वारा कई तरह के प्रयोगात्मक कार्य किये गये और इससे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को एक महत्वपूर्ण बल प्राप्त हुआ है।

वुन्ट के योगदानों का मूल्यांकन

मनोविज्ञान के क्षेत्र में वुन्ट का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह रहा है कि वे मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग किये और इसे एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक विज्ञान का दर्जा दिलाने में समर्थ हुए इसके बाद भी कुछ बिन्दुओं पर इनकी आलोचना की गई है।—

→ आलोचकों का मत है कि वुन्ट ने मात्र कुछ विषयों पर ही अपना केन्द्र कार्य किया। इससे इसका स्वरूप संकीर्ण हो गया।

→ कुछ आलोचकों का मत है कि वुन्ट ने चेतन अनुभूति के विश्लेषणात्मक स्वरूप पर जरूरत से ज्यादा बल डाला। इस कारण वुन्ट को कुछ मनोवैज्ञानिकों ने पुराने विचार का मनोवैज्ञानिक माना है।

→ आलोचकों का यह भी मत है कि वुन्ट ने चेतन अनुभूति के तत्वों के स्वरूप को विचार एवं संरचनात्मक माना है, जो कि किसी भौतिक वस्तु के अस्तित्व के समान होता है। इसलिए इसे अस्तित्ववाद की भी संज्ञा दी गयी है।

→ आलोचकों का मत है कि चेतन अनुभूति के तत्व अर्थात् संवेदन तथा भाव का अस्तित्व किसी भौतिक वस्तु के समान नहीं होता है।

इन आलोचनाओं के बाद भी प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की संस्थापना करने में वुन्ट के योगदान के समानान्तर किसी अन्य मनोवैज्ञानिक का योगदान नहीं है।

Scanned with CamScanner